* S - 2 5 2 3 / 6 0 0 *

S-2523

M. A. (Sem. I) Examination

March/April – 2011

Hindi : Paper - IV

(Elective)

(आधुनिक हिन्दी काव्य)

(New Course)

Time : **3** Hours] [Total Marks : **70**

सूचना :

(१)

નીચે દર્શાવેલ ☛ નિશાનીવાળી વિગતો ઉત્તરવહી પર અવશ્ય લખવી.
Fillup strictly the details of ☛ signs on your answer book.

Name of the Examination :

☛ **M. A. (SEM. 1)**

Name of the Subject :

☛ **HINDI - 4 (ELECTIVE) (NEW)**

☛ Subject Code No. : **2 5 2 3** ☛ Section No. (1, 2,.....) : **NIL**

Seat No. :

Student's Signature

(२) दाहिनी ओर प्रश्नों के अंक दर्शाये गए हैं ।

१ द्विवेदीयुग के प्रमुख कवियों का परिचय दीजिये । १८

अथवा

१ छायावादी कविता की मुख्य विशेषताओं को सोदाहरण स्पष्ट कीजिये । १८

२ 'साकेत' के आधार पर गुप्तजी की वैष्णव–भावना को समझाइये । १७

अथवा

२ 'साकेत' का महाकाव्यत्व सिद्ध कीजिये । १७

३ 'तुलसीदास' छायावादी काव्य की परम उपलब्धि हैं । –सतर्क उत्तर दीजिये। १७

अथवा

३ 'तुलसीदास' काव्य की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का परिचय दीजिये । १७

४ (अ) टिप्पणियाँ लिखिए : ९

(१) 'साकेत' के राम।

अथवा

'साकेत' के नवम् सर्ग का भाव–पक्ष।

(२) 'तुलसीदास' का उद्देश्य ।

अथवा

'तुलसीदास' की भाषा–शैली ।

(ब) ससंदर्भ व्याख्या कीजिये : ९

(१) निरख सखी, ये खंजन आये,
फेरे उन मेरे रंजन ने नयन इधर मन भाये !
फैला उनके तन का आतप, मन ने सर सरसाये,
घूमें वे इस ओर वहाँ, ये हंस यहाँ उड़ छाये!
करके ध्यान आज इस जन का निश्चय वे मुसकाये,
फूल उठे हैं कमल, अधर–से ये बन्धूक सुहाये!
स्वागत, स्वागत, शरद्, भाग्य से मैंने दर्शन पाये,
नव ने मोती वारे, लो, ये अश्रु अर्घ्य भर लाये !

अथवा

अब नहीं, रही दीन मैं कभी,
तुम मुझे मिले तो मिला सभी।
प्रभु कहाँ, कहाँ किन्तु अग्रजा,
कि जिनके लिए था मुझे तजा?
वह नहीं फिरे ? क्या तुम्हीं फिरे ?
हम गिरे अहो ! तो गिरे, गिरे।

(२) जागा, जागा, संस्कार प्रबल,
रे गया काम तत्क्षण वह जल,
देखा, वामा, वह न थी, अनल–प्रतिमा वह;
इस ओर ज्ञान, उस ओर ज्ञान,
हो गया भस्म वह प्रथम भान,
छूटा जग का जो रहा ध्यान, जड़िमा वह।

अथवा

करना होगा यह तिमिर पार–
देखना सत्य का मिहिर द्वार–
बहना जीवन के प्रखर ज्वार में निश्चय–
लड़ना विरोध से द्वन्द्व–समर,
रह सत्य–मार्ग पर स्थिर निर्भर–
जाना, भिन्न भी देह, निज घर निःसंशय।